International Journal of Information Movement Vol.2 Issue X February 2018)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 127-129

संत साहित्य और विश्व कल्याण

कल्पना
शोधार्थी,
टीचिंग अस्सिस्टेंट
हिंदी विभाग, भगत फूल सिंह महिला विश्वद्यालय,
खानपुर कलां सोनीपत।
Email:- ksnrw16@gmail.com

विश्व की महान हस्तियां काल–प्रसूत होती हैI उनकी महान वाणी के द्वारा युग–युग तक जन–जीवन को जागृत करती रहती है तथा जाति देश और विश्व को प्रेरित करती रहती है I राजनैतिक अशांति, सामाजिक अवयवस्था, धार्मिक उहापोह,आर्थिक विषमता, साहित्यिक अवमूल्यन तथा सांस्कृतिक पतन के इस युग में महान पुरुषो की आवश्यकता थीI इन सभी मानवीय विद्रुपतओं के प्रति सत्याचरण के विश्वासी, निडर,कर्मण्य, निर्भीक भारत के संतो ने अपनी सहज अनुभूति को स्पष्ट वाणी के रूप में अभिवयक्त किया, जो अनायास ही जनमानस की हार बन गईI इन संतों के काव्य ने न केवल अपने युग को ही प्रभावित किया, अपितु आज के महान सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यामित्क नेता महात्मा गाँधी तथा साहित्य दृष्टा कवीन्दर–रविंदर भी जीवन भर उनकी वाणी से विशेष रूप से प्रभावित रहें है I

"सत्याचरण के माध्यम से जो स्वतः ब्रह्मा के सच्चे स्वरूप के प्रति निरंतर उन्मुख रहता है, वही संत कहलाता है|"

इस दृष्टि से जब हम भारतीय आध्यात्मिक परम्परा पर प्रखर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि शंकर से लेकर कबीर रैदास धनाभगत संत बेनी संत दादूदयाल शेख फरीद मलूकदास संत रज्जब संत भीखा संत चरणदास संत सहजोबाई एवं दयाबाई तक सभी ने अपनी एक अहम भूमिका निभायी है द्य सच कहे तो रामकृष्ण परमहंस विवेकानंद महात्मा गाँधी श्री अरविंद तथा विनोबा भावे उसकी परम्परा के आधुनिकतम फल है द्य इन संतों ने मानव को भक्ति और भक्ति को मानव में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है द्य चूंकि संत का धर्म मानव धर्म होता हैए उसकी साधना भी मानव धर्म की साधना होती हैएजिनको वह समाज में रहकर समाज के द्वारा समाज में शांति स्थापित करने में प्रयत्नशील रहता है।

"भिन्न भिन्न स्थितियों और जातियों में उत्पन्न ये संत कविगण उदात्त और उच्च भारतीय मनीषा के प्रतिनिधि थे। उक्त सत कविगण भिक्षा नहीं मांगते थे I गृहस्थ होते हुए अपनी गृहस्थी के पालन–पोषण हेतु स्वयं तथा अपने पैतृक कार्य में संलग्न होकर काव्य–रचना करते है। इसलिए ये संत किसी व्यक्ति विशेष, राजा–महाराजा, बादशाह के अधीन नहीँ थे। वे स्वावलम्बी थे। सत्य एवम खरी बात ककहने में निर्भय–निपुण थे I जाति–पाति, छुआछूत, ऊंच नीच आदि के प्रबल विरोधी संत कवियो ने जन जन के मन में सक्ता और सरल भाषा में मानव घर्म और विश्व बंधुत्व की भावना को जागृत किया I यघपि संत कवि पढे–लिखे नहीं थे तथापि उन्होने जीवंत काव्याभिव्यक्ति में नपी तुली बातें व्यक्त की हे. जिनमें सरल और प्रभावोत्पादक काव्यतत्वो का समावेश है।

समाज की धार्मिक, सामाजिक राजनैतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक सभी प्रकार की समस्याओं का उन्होने वैयक्तिक जीवन के माध्यम से, समाधान प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया I इन संतों ने समाज में सुव्यवस्था और व्यवहारिक जीवन में संतुलन और शांति लाने को ही प्रमुख ईकाई माना है । संतों का मुख्य कार्य लोगो में उच्च गुणों के बीज डालना है जिससे वे सही काम करने के लिए अपनी जान जोखिम में डालने का प्रयास का सके I धार्मिक आडम्बर और विषमताएं उनको तोड न पायी वे सदा इनसे जूझते रहे भागे कभी नही और इसीलिए हारे भी कभी नहीं l सामाजिक कुरीतियों को उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया और यथासम्भव उन पर भी कुठारागात किया । राजनैतिक अत्यचारो से जूझते–जूझते उन्होचे सिर तक कटा दिया था 'पर उसे झुकने नहीँ दिया । आर्थिक दरिद्रता से अपने को उबारने के लिए कोई जीवन भर कपडा बुनता रहा. तो कोई' जूतियां ही गाठता" रहा I

संतों की आध्यात्मिक साधना में भी सत्य की साधना है । एक संत का संतोषी होना आवश्यक है । संत को ऐश्वर्यशाली जीवन जीने की मनाही है । गरीबी में रहकर ही मनुष्य या संत दीन जनों की सेवा करता है । "सच्चा संत अपनी सब चारित्रिक बुराईयों को दूर कर उन गुणों को धारण करता हैं जो उसको सर्व दोष रहित ब्रहा के समान निर्मल और स्वछ बना देता है। संत काव्य में प्रेम को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है। यह निश्छल प्रेम ही परमात्मा से मिलता है। परमात्मा परम पति है तो साधक उसकी सच्ची प्रेमिका। "मनुष्य जाति से नहीं कर्म से महान बनता है । यह धारणा संतों की सारपूर्ण शक्ति है जिस प्रकार की जातिय विषमता मध्यकाल में थी, कमोवेश आज भी ज्यों की त्यों समूचें राष्ट्र में परिव्याप्त है । ब्राह्मण जाति,सभी जातियों से सर्वोपरि तब भी थी और आज भी है।

वह अपने को निम्न एवं अछूत माने जाने वाली जाती शुद्रों का अन्न जल ग्रहण नहीं करते | गावों में इनका पुराना रूप अब भी सुरक्षित है क्योकि कि शिक्षा के अभाव में अधुनिकता और मानवतावादी दृष्टि के तहत दुनिया के बदलते हुए चरित्र की गांव वालों को कोई जानकारी नहीं है विडंबना देखिए उच्च जातियों के बर्तन भांडे ,कुत्ते और बिल्लियों द्वारा छू जाने पर मान्य नहीं होते ,किन्तु शूद्रों का स्पर्श होने पर उन्हें बेच दिया जाता है ,आग मे तपाकर शुद्ध किया जाता है कहना न होगा कि उनकी दृष्टि मे मनुष्य का स्थान पशु से बदतर है अतएव जातिगत विषमता के निवारण के सबंध मे संतकवियों की रचनाएँ आज भी प्रांसगिक हैं ।

किसी भी धर्म की श्रेष्ठ बातों और सिद्धांतो को संत कवियों ने सहज रूप से स्वीकार किया है और नकारात्मक सोच का परित्याग करने को कहा है उन्होंने संकीर्णता, स्वार्थ तथा सामप्रदायिकता कभी भी स्वीकार्य है संत भावाना किसी सम्प्रदाय विशेष में आबद्ध नही हुई, यह मानवीय धरातल पर विकसित हुई है किसी भी धर्म, वर्ग या जाति का व्यक्ति इसे अनायास ही अपना सकता था और जब चाहे इसका त्याग भी कर सकता था समाज के किसी भी वर्ग से आने वाले चरित्रवान व्यक्ति ने इसे हंस कर अपनाया, यदि नही भी अपनाया तो कम से कम विरोध नही किया | इनकी जीवन दृष्टि मूलतः मानवतावादी थी ।
इसलिए छिपी, दर्जी, नाई, जुलाहा, चमार और राजा सभी एक भक्ति सूत्र में पिरोय जाकर संत माला के जगमगाते माणिक बन गये ।

वैज्ञानिक प्रगति और राजनैतिक अशांति के इस युग में आज राजनीतिज्ञो ने विश्व संसार की आवश्यकता अनुभव की है ।

यदि गहराई में जाकर मानव–मानव को निकट लाने का यह प्रयत्न देखा जाये तो वह मानव धर्म और कुछ नही, इन संतों की मान्यताओं का ही विकसित एवं परिषकृत रूप है संतो की मान्यातों का महत्व इसी से स्पष्ट है | "अतीत अपने वर्तमान में किसी न किसी रूप हमेशा जीवित रहता है ।

कवि तब तक महान कहलाने का अधिकारी नहीं होता ,जब तक उसकी दृष्टि अपने वर्तमान की सीमाओं को भेदकर भविष्य को न पढ़ लें | उनकी दृष्टि सार्वकालिक व सार्वभौमिक होती है उनके विचारों का यह तत्व उन्हें सतत प्रासंगिक बनाए रखता है और आने वाली के पीढ़ियों लिए प्रेरणास्त्रोत बने रहते है | संत कवियों की जनकल्यानी वाणियों तद्युगीन समाज के संदर्भ में कही गयी थी ।

किन्तु उनकी महत्ता इस में है कि वे वर्तमान में भी अपनी प्रसंगिक सार्थकता की उर्जा से सरोबार है| निसकोंच संसार का उद्धार करने वाले, मानव–मानव को एकता का सन्देश देने वाले, जीवन में अलौकिक रस का संचार करने वाले, विश्व मे शांति का प्रसार करने वाले संतों और उनकी मान्यताओं का यह संक्षिप्त लेखा जोखा है | सचमुच में संत वाणिया प्रदीप है जिनके प्रकाश में मनुष्य का समस्त अज्ञान मिट जाता है |

संदर्भ:

1. संत काव्य उद्गम स्रोत, विकास एवं मान्यताएँ– डॉ धर्मपाल सैनी पृष्ठ 04
2. मध्यकालीन हिंदी संत काव्य दर्शन और मूल्यांकन– डॉ आदित्य प्रचाँददिया पृष्ठ 0166
3. हिंदी भक्ति साहित्य मे सामाजिक मूल्य व अवधारणाएं –डॉ सावित्री चन्दर शोभा पृष्ठ 0180
4. मध्यकालीन हिंदी संत काव्य ;दर्शन और मूल्यांकन –डॉ आदित्य प्रचाँददिया पृष्ठ 0217
5 मध्यकालीन हिंदी संत काव्य ; दर्शन और मूल्यांकन –डॉ आदित्य प्रचाँददिया पृष्ठ 0288